विचार बिन्दु

अपना नाम सदा कायम रखने के लिए मनुष्य बड़े से बड़ा जोखिम उठाने, धन खर्च करने, हर तरह के कष्ट सहने, यहाँ तक कि मरने के लिए भी तैयार हो जाता है। –सुकरात

एलपीजी और पेट्रोलियम पदार्थों की उपलब्धता की सकारात्मक पहल

अमेरिका–इजरायल व ईरान के बीच युद्ध के कारण कच्चे तेल और एलपीजी की उपलब्धता की कमी का भ्रामक संदेश फैलाकर जिस तरह से देश और प्रदेश में प्रदर्शन और आमजन में भय का वातावरण बनाने का प्रयास किया जा रहा है उसके बीच प्रदेश में किसी तरह का पैनीक हालात ना बने इसके लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पहल कर प्रदेशवासियों के बीच सकारात्मक संदेश दिया है। होता यह है कि जब देश में नकारात्मक माहौल बनाने का प्रयास किया जाता है तो उसके पीछे जो ध्येय होता है व समाज के व्यापक हित में नहीं हो सकता। इसके साथ ही जनता भी समझदार होती है और नकारात्मक माहौल तैयार करने वाले तत्व जल्द ही बेनकाब हो जाते हैं। देश और प्रदेश में पेट्रोल, डीजल, एलपीजी, सीएनजी, पीएनजी के प्रर्याप्त भण्डार उपलब्ध है और सरकार निरंतर आपूर्ति बनाये रखने के प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रोएक्टिव रोल निभाते हुए ना केवल हालात की समीक्षा की, अधिकारियों को स्पष्ट संदेश दिए अपितु प्रदेशवासियों को भी विश्वास दिलाने का सार्थक कदम उठाया जिससे इस तरह के मौकों का गलत लाभ उठाते हुए कालाबाजारी, जमाखोरी व इसी तरह के अन्य हथकण्डे अपनाने वालों पर सख्त कार्रवाई का संदेश दे दिया है। उन्होंने साफ कर दिया है कि प्रदेश में किसी तरह की कोई कमी नहीं है इसलिए पैनीक होने की आवश्यकता नहीं है। इसके साथ ही मुख्यसचिव वी. श्रीनिवास अपने अधिकारियों और जिलाधिकारियों से नियमित संवाद कायम कर व्यवस्था को चाकचोबंद किया जा रहा है। सबसे अधिक और महत्वपूर्ण कीसोशल मीडिया पर नजर रखने और भ्रांतियां फैलाने वालों पर सख्त कार्रवाई के निर्देश दे दिए है।

एक बात साफ हो जानी चाहिए कि युद्ध के हालात हमारी देन नहीं है। इसके साथ ही यह भी साफ हो जानी चाहिए कि दुनिया के अधिकांश देश एक–दूसरे पर निर्भर है। जहां तक कच्चे तेल, एलपीजी आदि की पूर्ति अधिकांश देशों द्वारा आयात करके ही की जाती है। हमारी भी बहुत कुछ स्थानीय मांग की पूर्ति आयात के माध्यम से ही होती है। ऐसे हालातों में भी केन्द्र सरकार की सराहना की जानी चाहिए कि हार्मुज जनडमरुमध्य के हालात आयात को प्रभावित करने के बावजूद कूटनीतिक प्रयासों से एलपीजी के मालवाहक जहाजों का आना शुरु हो चुका है। हांलाकि गैरजिम्मेदार लोगों ने एलपीजी के इन जहाजों को लेकर भी भ्रम फैलाने में कोई कमी नहीं छोड़ी। वे यह भूल गए कि यह विश्वव्यापी संकट का दौर है और दुनिया का कोई भी देश इन हालातों से अछूता नहीं हैं। जिस तरह से आंदोलन–प्रदर्शन और व्यक्तव्यों के माध्यम से लोगों में कृत्रिम कमी का माहौल बनाया जा रहा है और कालाबाजारी व जमाखोरों को अवसर दिलाया जा रहा है उसे किसी भी हालत में उचित नहीं कहा जा सकता है। बल्कि ऐसा लगता है कि जैसे इस तरह के तत्वों के सामने संकट के दौर में जो नैतिकता और देश के प्रति दायित्व होना चाहिए, उसे भूल चुके हैं।

देश और प्रदेश में पेट्रोल, डीजल, एलपीजी, सीएनजी, पीएनजी के प्रर्याप्त भण्डार उपलब्ध है और सरकार निरंतर आपूर्ति बनाये रखने के प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रोएक्टिव रोल निभाते हुए ना केवल हालात की समीक्षा की, अधिकारियों को स्पष्ट संदेश दिए अपितु प्रदेशवासियों को भी विश्वास दिलाने का सार्थक कदम उठाया जिससे इस तरह के मौकों का गलत लाभ उठाते हुए कालाबाजारी, जमाखोरी व इसी तरह के अन्य हथकण्डे अपनाने वालों पर सख्त कार्रवाई का संदेश दे दिया है।

भूलना नहीं चाहिए कि यह वहीं भारत देश है जब लाल बहादुर शास्त्री के समय अन्न संकट आया तो एक आह्वान पर छोटे बड़े सभी ने एक दिन सोमवार का व्रत रखना आरंभ कर दिया। पुरानी पीढ़ी के कुछ लोग आज भी उस आह्वान के चलते आज भी सोमवार का व्रत करते हुए मिल जाएंगे। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि 1971 के बांग्लादेश के युद्ध के समय समूचा देश इन्दिरा गांधी के साथ एक स्वर में स्वर मिला रहा था। आज पता नहीं ऐसे हालात कैसे होने लगे हैं कि ऑपरेशन सिन्दुर या अन्य सैन्य गतिविधियों पर भी प्रश्न उठाये जाने लगे हैं। संभवतः दुनिया के किसी भी देश में इस तरह की बात नहीं होती होगी।

जहां तक एलपीजी की बात है तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि एक समय था जब एलपीजी कनेक्शन के लिए वर्षों इंतजार करना पड़ता था। सामान्य परिस्थितियों में भी सिलेण्डर प्राप्त करने के लिए लंबी कतारों से भी दो चार होना पड़ता था। धरातल पर देखेंगे तो हालात की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि आज 31.3 मिलियन टन एलपीजी गैस की खपत है। देश में 31 करोड़ सक्रिय एलपीजी धरेलू कनेक्शन है। समूचे देश की बात की जाए तो प्रतिदिन ओसतन 50 से 60 लाख एलपीजी सिलेण्डर की आवश्यकता होती है। प्रेसे में मांग और आपूर्ति बनाये रखना अपने आप में दुश्वर है पर हालिया संकट को अलग कर दिया जाए तो पिछले कुछ सालों से एलपीजी या पेट्रोल आदि को लेकर देश में किसी तरह का संकट देखने को नहीं मिला। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल और मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास द्वारा नियमित क्लोज मोनेटरिंग का ही परिणाम है कि प्रदेशवासियों में विश्वास बना है। गैस की बुकिंग से लेकर उपलब्धता को लेकर सारे संदेहों को दूर किया गया है। वितरण व्यवस्था पर निगरानी रखी जा रही है और गैस एजेन्सियों व अन्य असामाजिक तत्वों पर क़ड़ी नजर रखी जा रही है। शादी–विवाह जैसे आयोजनों के लिए भी उचित व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है वहीं अफवाहों और फर्जी खबरों पर तत्काल कार्रवाई की जा रही है।

सवाल साफ है कि विपरीत हालातों या यों कहें कि आपातकालीन हालातों में पूरे देशवासियों को एक होने की आवश्यकता व समस्या के समाधान में सहभागीय बनने की आवश्यकता होती है पर ऐसे समय में भी गैरजिम्मेदारी पूर्ण व्यवहार निश्चित रुप से नहीं होना चाहिए। आखिर हम इस समाज के ही तत्व है। हमारे हित और समाज के हित एक है। केवल विरोध के नाम पर विरोध किसी भी हालत में उचित नहीं माना जा सकता। खैर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की संवदेनशीलता और उचित व्यवस्था सुनिश्चित कराने की सराहना की जानी चाहिए। सरकारी और गैरसरकारी संगठनों को भी आगे आकर देशहित में एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभानी चाहिए।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 26 मार्च, 2026

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2083, आद्रा नक्षत्र सायं 4:19 तक, शोभन योग रात्रि 12:32 तक, बव करण दिन 11:49 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

गृह स्थितिः सूर्य–मीन, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–कुम्भ, बुध–कुम्भ, गुरू–मिथुन, शुक्र–मेष, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और रवियोग सायं 4:19 से आरम्भ होगा। आज मंगल उदय पूर्व दिन 2:06 पर होगा। आज दुर्गाष्टमी, महाअष्टमी, अशोकाष्टमी है। आज श्री रामनवमी, अन्नपूर्णा पूजा है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 8:00 तक, चर 11:02 से 12:33 तक, लाभ अमृत 12:33 से 3:35 तक, शुभ 5:06 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:29, सूर्यास्त 6:37

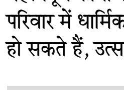

मेष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में यात्रा संभव है। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं, उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

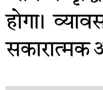

सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन/संदेश प्राप्त होंगे।

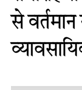

धनु

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा, धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

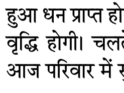

वृष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आज परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

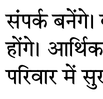

कन्या

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी।

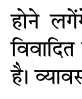

मकर

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। मानसिक तनाव दूर होने लगेंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

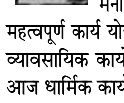

मिथुन

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आज धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

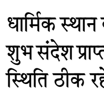

तुला

आज धार्मिक–मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

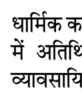

कुंभ

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

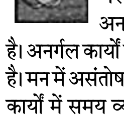

कर्क

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। आज धार्मिक कार्यों में समय व्यतीत हो सकता है।

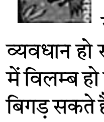

वृश्चिक

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

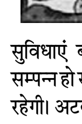

मीन

घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वाल्मीकीय रामायण में शासन प्रबंधन के सूत्र

रामनवमी विशेष.......

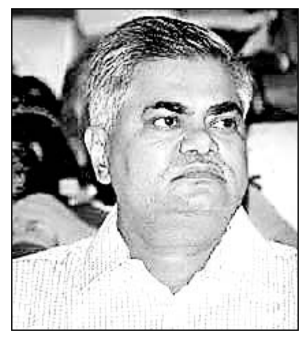

राजेश्वर सिंह

महाराज दशरथ द्वारा भरत को अयोध्या का राज्य तथा श्रीराम को चौदह वर्ष का वनवास दिए जाने के फलस्वरूप श्रीराम चित्रकूट में निवासरत थे। उन्हें वापस अयोध्या लाकर राज्याभिषक्त करने के लिए भरत ने सपरिवार, सकर्मिवृन्द, सनागरिक व ससैन्य चित्रकूट की यात्रा की। भरत व श्रीराम की मुलाकात के समय श्रीराम द्वारा गुरुजनों, परिवार, मन्त्रिगण, सेना, कोष, प्रजा, कृषि, वाणिज्य इत्यादि के संबंध में भरत से कतिपय प्रश्न किये गये। इन प्रश्नों की प्रकृति तथा इनमें निहित गूढ़ मन्तव्यों में ही श्रीराम का शासनादर्श स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

सर्वप्रथम श्रीराम भरत से मन्त्रिपरिषद के सदस्यों के व्यक्तिगत व व्यावसायिक गुणों के संबंध में पूछते हैं कि क्या भरत द्वारा नियुक्त मन्त्रिगण शूरवीर, शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय तथा बाहरी चेष्टाओं से ही मन की बात समझ लेने वाले सुयोग्य व्यक्ति हैं? श्रीराम कहते हैं कि अच्छी मन्त्रणा ही राजा की सफलता का मूल कारण है। वह भी तभी सफल होती है, जब नीतिशास्त्र निपुण अमात्य उसे सर्वथा गुप्त रखें। राजा को किसी भी गूढ़ विषय पर न तो अकेले विचार करना चाहिए और न ही बहुत लोगों के साथ बैठकर मन्त्रणा करनी चाहिए। राजा के मन्त्रियों में यदि एक भी मेधावी, शूरवीर, चतुर एवं नीतिज्ञ हो तो वह राजा को बहुत बड़ी सफलता की प्राप्ति करा सकता है।

श्रीराम प्रधान, मध्यम एवं निम्न पदों पर कर्मियों को योग्यतानुसार नियुक्त करने की बात कहते हैं, साथ ही अत्यधिक कठोर दण्ड तथा अत्यधिक कठोर करारोपण का निषेध करते हैं। इसके अलावा वह कार्मिकों को निर्धारित किया हुआ समुचित वेतन व भत्ता भी समय पर देने की बात करते हैं ताकि असंतोष व्याप्त न हो और अनिष्ट कारित न हो। श्री राम स्वपक्ष व शत्रु पक्ष के अधिकारियों व कर्मचारियों की गतिविधियों पर दृष्टि रखने के लिए गुप्तचर व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण की बात भी कहते हैं।

श्रीराम कृषि तथा व्यापार से आजीविका चलाने वाले लोगों की कुशलता की जानकारी भी प्राप्त करते हैं क्योंकि उनके मतानुसार कृषि व व्यापार की उन्नति ही सम्पूर्ण राज्य के सुख एवं उन्नित की कारक है। श्रीराम राज्य की आय के संबंध में भी जानकारी प्राप्त करते हैं तथा यह मत भी व्यक्त करते हैं कि राज्य की आय अधिक व व्यय कम होना चाहिए। दण्ड विधान के संबंध में श्रीराम का मत यह है कि दोषारोपित व्यक्ति के संबंध में शास्त्रज्ञान में कुशल विद्वानों द्वारा समुचित विचार–विमर्श के उपरान्त ही दण्ड का निर्धारण होना चाहिए। श्रेष्ठ, निर्दोष और शुद्धात्मा को दण्ड नहीं मिलना चाहिए तथा दोषसिद्ध को अवश्य दण्ड मिलना चाहिए। धनी व निर्धन के बीच में विवाद हो तो भी निष्पक्ष व निर्दोष न्याय किया जाना चाहिए।

उक्त प्रसंग में ही श्रीराम ने राजाओं के चौदह दोष भी गिनाए हैं, और भरत को उक्त चौदह दोषों से दूर रहने के लिए कहा है। उक्त चौदह दोष निम्नानुसार हैं– नास्तिकता, असत्य भाषण, क्रोध, प्रमाद, दीर्घसूत्रता, ज्ञानी पुरुषों का संग न करना, आलस्य, नेत्र आदि पाँचों इन्द्रियों के वशीभूत होना, राजकार्य के विषय में अकेले ही विचार करना, प्रयोजन को न समझने वाले विपरीतदर्शी मूर्खों से सलाह लेना, निश्चित किए हुए कार्यों को शीघ्र प्रारम्भ न करना, गुप्त मंत्रणाओं को सुरक्षित न रखकर प्रकट कर देना, मांगलिक आदि कार्यों का अनुष्ठान न करना तथा सभी शत्रुओं पर एक साथ चढ़ाई कर देना।

उक्त प्रसंग में ही श्री राम कामजनित दश दोषों यथा आखेट, जुआ, दिन मे सोना, दूसरों की निंदा करना स्त्री में आसक्त होना, मद्यपान, नाचना, गाना, बाजा बजाना और व्यर्थ घूमना इत्यादि को राजा के लिए त्याज्य बताते हैं। राजा, मंत्री, राष्ट्र, किला, कोष, सेना व मित्र वर्ग को श्रीराम सप्तवर्ग कहते हैं और इन्हें राज्य का अनिवार्य अंग मानते हुए इन पर निरन्तर ध्यान देने के लिए कहते हैं।

इसी प्रकार खेती की उन्नित करना, व्यापार को बढ़ाना, दुर्ग बनाना, पुल निर्माण करना, जंगल से हाथी पकड़कर मंगवाना, खानों पर अधिकार प्राप्त करना, अधीन राजाओं से कर प्राप्त करना और निर्जन क्षेत्र को आबाद करना राजा के लिए उपादेय आठ गुण हैं, जिन्हें श्रीराम अष्टवर्ग कहते हैं और भरत से इनकी पालना के लिए कहते हैं। आग लगना, बाढ़ आना, बीमारी फैलना, अकाल पड़ना और महामारी का प्रकोप होने को श्रीराम दैवीबाधा कहते हैं, और राज्य के अधिकारियों, चोरों, शत्रुओं, राजा के प्रिय व्यक्तियों व स्वयं राजा के लोभ से जो भय व्याप्त होता है उसे मानव निर्मित बाधा कहते हैं । इन दोनों तरह की बाधाओं का मुकाबला राजा को सतर्कता व युक्तिपूर्वक करना चाहिए। राष्ट्र की सुरक्षा में विदेश नीति के संबंध में श्रीराम द्वारा भरत को दिया गया उपदेश भी सार्वकालिक दृष्टि से समीचीन प्रतीत होता है। संधि, विठाह, यान, आसन, द्वैधीभाव व समाश्रय राष्ट्र रक्षा नीति व विदेश नीति के आवश्यक अंग हैं । इनमें शत्रु से मेल रखना सन्धि, उससे लड़ाई छेड़ना विग्रह, आक्रमण करना, यान, अवसर की प्रतीक्षा में बैठे रहना आसन, दुरंगी नीति बरतना द्वैधीभाव और अपने से बलवान राजा की शरण लेना समाश्रय कहलाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रीराम के द्वारा उपदिष्ट शासन प्रबंधन के उपर्युक्त सूत्र समकालीन परिप्रेक्ष्य में भी पूर्णतया प्रासंगिक व सुसंगत हैं। इन सूत्रों का विस्तार, व्यापकता गूढ़ता, गहनता व इनमें सन्निहित राष्ट्र व जन की सुरक्षा, संरक्षा व कल्याण की उदात्त भावना व पवित्र उद्देश्य सर्वथा आश्चर्यचकित कर देने वाला है। शासक वर्ग को आत्मोन्मुख होकर सदा सर्वदा इन प्रश्नों का उत्तरदायी होने का प्रयास करना चाहिए ताकि उन्हें यह पता चल सके कि उनका शासन तंत्र योग्यता, निष्पक्षता, नियमबद्धता, न्याय, जनकल्याण तथा सर्वतोमुखी विकास की शाश्ववत व सनातन कसौटियों पर खरा उतरने में सक्षम है अथवा नहीं? श्रीराम के ये प्रश्न राजनीति शास्त्र व लोकप्रशासन की अमूल्य धरोहर हैं और इनके उत्तर में ही राम राज्य की सम्पूर्ण संकल्पना सन्निहित है।

–राजेश्वर सिंह,
राज्य निर्वाचन आयुक्त,
राजस्थान

वैश्विक तनाव के दौर में भारत की संतुलित विदेश नीति

मदन प्रजापत

आज की दुनिया तेजी से बदल रही है और वैश्विक राजनीति पहले से कहीं अधिक जटिल हो गई है। अलग–अलग देशों के बीच संघर्ष, युद्ध और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ रही है। यूरोप में रूस–यूक्रेन युद्ध, मध्य–पूर्व में बढ़ते संघर्ष, अमेरिका और चीन के बीच शक्ति संतुलन की प्रतिस्पर्धा और हाल ही में अमेरिका–ईरान के बीच बढ़ते सैन्य तनाव ने पूरी दुनिया को अस्थिर बना दिया है। इन परिस्थितियों में लगभग हर देश किसी न किसी पक्ष के साथ खड़ा दिखाई देता है। लेकिन भारत एक अलग और संतुलित नीति अपनाते हुए लगभग सभी देशों के साथ अपने संबंध बनाए रखने में सफल रहा है। यही भारत की विदेश नीति की सबसे बड़ी विशेषता है।

भारत की विदेश नीति का मूल सिद्धांत संतुलन और रणनीतिक स्वायत्तता है। इसका अर्थ है कि भारत किसी एक शक्ति–गुट के साथ पूरी तरह जुड़ने के बजाय अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए स्वतंत्र निर्णय लेता है। यह नीति नई नहीं है। आज़ादी के बाद से ही भारत ने गुटनिरपेक्षता (–) की नीति अपनाई थी। उस समय शीत युद्ध के दौरान दुनिया दो बड़े गुटों–अमेरिका और सोवियत संघ–में बंटी हुई थी, लेकिन भारत ने दोनों के साथ संबंध बनाए रखे। आज भी वही सोच आधुनिक रूप में दिखाई देती है।

हाल के वर्षों में दुनिया के कई हिस्सों में संघर्ष बढ़े हैं। रूस–यूक्रेन युद्ध इसका एक बड़ा उदाहरण है। पश्चिमी देशों ने रूस के खिलाफ कड़े प्रतिबंध लगाए, जबकि कई देशों को यह तय करना पड़ा कि वे किस पक्ष का समर्थन करें। भारत ने इस स्थिति में संतुलित रुख अपनाया। भारत ने युद्ध को समाप्त करने और शांति वार्ता की आवश्यकता पर जोर दिया, लेकिन साथ ही रूस के साथ अपने लंबे समय से चले आ रहे रक्षा और ऊर्जा संबंधों को भी बनाए रखा। भारत के लिए रूस एक महत्वपूर्ण रक्षा साझेदार रहा है, जबकि अमेरिका और यूरोपीय देश भारत के प्रमुख व्यापार और तकनीकी सहयोगी हैं। इसलिए भारत ने किसी एक पक्ष के साथ पूरी तरह खड़े होने के बजाय दोनों के साथ संवाद बनाए रखा। इसी तरह, मध्य–पूर्व में भी भारत की विदेश नीति संतुलित दिखाई देती है। भारत के संबंध सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, इज़राइल और ईरान–सभी देशों के साथ अच्छे हैं। यह एक बड़ी कूटनीतिक उपलब्धि मानी जाती है क्योंकि इन देशों के आपसी संबंध कई बार तनावपूर्ण रहे हैं।

हाल ही में अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते सैन्य तनाव ने इस क्षेत्र को और अधिक संवेदनशील बना दिया है। 2026 में अमेरिका और उसके सहयोगियों द्वारा ईरान पर सैन्य हमलों के बाद क्षेत्र में संघर्ष तेज हो गया और ईरान ने जवाबी मिसाइल और ड्रोन हमले किए। इससे पूरे मध्य–पूर्व में अस्थिरता बढ़ गई। इस संघर्ष का असर केवल क्षेत्रीय राजनीति तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी पड़ रहा है। फारस की खाड़ी में स्थित स्ट्रेट ऑफ होर्मुज़ दुनिया के तेल व्यापार के लिए बेहद महत्वपूर्ण मार्ग है। इस क्षेत्र में बढ़ते संघर्ष के कारण तेल आपूर्ति प्रभावित हुई और वैश्विक ऊर्जा बाजार में अनिश्चितता बढ़ गई।

ऐसे तनावपूर्ण माहौल में भारत के सामने चुनौती यह है कि वह अमेरिका और ईरान दोनों के साथ अपने संबंध बनाए रखे। अमेरिका भारत का एक महत्वपूर्ण रणनीतिक और आर्थिक साझेदार है, जबकि ईरान भारत के लिए ऊर्जा और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी के लिहाज से महत्वपूर्ण रहा है। इसलिए भारत लगातार शांति, संवाद और कूटनीति के माध्यम से समाधान की बात करता रहा है। इसके अलावा अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा भी वैश्विक राजनीति का एक महत्वपूर्ण पहलू है। चीन एशिया और वैश्विक स्तर पर अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश कर रहा है, जबकि अमेरिका इसे संतुलित करने के लिए कई रणनीतिक कदम उठा रहा है। भारत इस परिस्थिति में भी संतुलन की नीति अपनाता है। भारत अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड जैसे मंचों पर सहयोग करता है, जो इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने की कोशिश करते हैं। वहीं दूसरी ओर भारत कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर चीन के साथ भी मौजूद रहता है, जैसे ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन।

भारत की विदेश नीति का एक और महत्वपूर्ण पहलू है बहुपक्षीय सहयोग। भारत संयुक्त राष्ट्र, जी–20 और ब्रिक्स जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय भूमिका निभाता है। हाल के वर्षों में भारत ने विशेष रूप से विकासशील देशों यानी ग्लोबल साउथ की आवाज को अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पहुंचाने का प्रयास किया है। भारत की बढ़ती आर्थिक ताकत भी उसकी विदेश नीति को मजबूत बनाती है। दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होने के कारण आज भारत वैश्विक राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। व्यापार, निवेश, तकनीक और ऊर्जा के क्षेत्र में भारत कई देशों के लिए एक भरोसेमंद साझेदार बन चुका है। इसके साथ ही भारत की मानवीय और सांस्कृतिक छवि भी उसकी विदेश नीति को मजबूत बनाती है। भारत हमेशा शांति, सह–अस्तित्व और सहयोग की बात करता रहा है। संकट के समय कई देशों को भारत ने सहायता भी प्रदान की है। कोविड–19 महामारी के दौरान भारत द्वारा कई देशों को वैक्सीन उपलब्ध कराना इसका एक उदाहरण है। हालांकि चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं। वैश्विक स्तर पर बढ़ती सैन्य प्रतिस्पर्धा, आर्थिक अनिश्चितता और तकनीकी प्रतिस्पर्धा भविष्य में और जटिल परिस्थितियां पैदा कर सकती हैं। अमेरिका–ईरान संघर्ष, रूस–यूक्रेन युद्ध और एशिया में बढ़ते तनाव जैसे मुद्दे आने वाले समय में वैश्विक राजनीति को प्रभावित करते रहेंगे। इन सबके बीच भारत की विदेश नीति का सबसे बड़ा लक्ष्य यही है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए दुनिया के विभिन्न देशों के साथ संतुलित और सहयोगात्मक संबंध बनाए रखे।

अंत में यह कहा जा सकता है कि आज जब दुनिया कई संघर्षों और विभाजनों से गुजर रही है, तब भारत ने एक ऐसा रास्ता चुना है जो संवाद, संतुलन और कूटनीति पर आधारित है। यही कारण है कि भारत आज लगभग सभी प्रमुख देशों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखने में सफल रहा है। भविष्य में भी यदि भारत इसी संतुलित और दूरदर्शी नीति को जारी रखता है, तो वह न केवल अपने हितों की रक्षा करेगा बल्कि वैश्विक शांति और स्थिरता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

–मदन प्रजापत,
(भाजपा प्रदेश प्रवक्ता)

अतीत, वर्तमान और भविष्य को साथ लेकर चलने का उत्सव बना "राजस्थान दिवस"

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल से प्रदेश की विरासत, अवसरों एवं संभावनाओं का परिचायक बना आयोजन

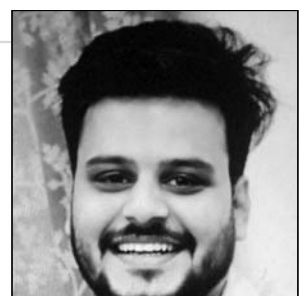

हेमेन्द्र सिंह

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नववर्ष के साथ ही नव चेतना एवं नव आरंभ का प्रतीक माना जाता है। इसी पावन बेला पर रेवती नक्षत्र एवं इंद्रयोग में 30 मार्च, 1949 को देश के पहले गृहमंत्री लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल की दूरदर्शिता से नए राजस्थान की सुदृढ़ नींव रखी गई। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने वर्ष 2025 में इस गौरवशाली परंपरा को पुनर्थापित करते हुए 30 मार्च के स्थान पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही राजस्थान दिवस मनाए जाने की शुरूआत की।

राजस्थान ने इस बार नव संवत्सर वि.सं. 2083 की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (19 मार्च) को प्रदेश की विरासत, अवसर एवं संभावनाओं के परिचायक के रूप में अपना स्थापना दिवस मनाया। राज्य सरकार द्वारा इस विशेष दिवस के उपलक्ष्य में 14 से 19 मार्च तक आयोजित कार्यक्रमों ने एक ओर जहां प्रदेश के गौरवशाली अतीत को प्रभावी ढंग से संरक्षित और पुनर्स्थापित करने का काम किया, वहीं दूसरी ओर जनकल्याणकारी कार्यों से खुशहाल वर्तमान एवं सुनहरे भविष्य के प्रति आश्वस्त भी किया।

अतीतः जड़ों से जुड़ाव, परंपरा एवं संस्कृति की सशक्त अभिव्यक्ति : राजस्थान दिवस 2026 के आयोजनों में प्रदेश की ऐतिहासिक विरासत और सांस्कृतिक पहचान को केंद्र में रखते हुए परंपरा को नए संदर्भों में प्रस्तुत किया गया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 15 मार्च को नई दिल्ली स्थित बीकानेर हाउस में 'राजस्थान उत्सव 2026' का शुभारंभ किया। इस आयोजन ने प्रदेश की लोककला, हस्तशिल्प, लोक संगीत, लोकनृत्य और पारंपरिक व्यंजनों की समृद्ध झलक को राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किया। वहीं, 19 मार्च को आयोजित राज्य स्तरीय एवं जिला स्तरीय भव्य सांस्कृतिक संध्या इस विरासत का चरम रूप रही, जहां लोक कलाकारों ने राजस्थान की जीवंत परंपराओं को साकार किया।

राजस्थान दिवस की पूर्व संध्या पर मुख्यमंत्री की उपस्थिति में जयपुर के गोविंददेव जी मंदिर में आयोजित महाआरती और प्रदेशभर के राजकीय मंदिरों में हुए विशेष धार्मिक ने प्रदेशवासियों को अपनी जड़ों से जोड़ने का काम किया। इसी तरह ज्ञान, तकनीक और नवाचार पर आधारित राजस्थान को जानें डिजिटल क्विज के माध्यम से युवाओं एवं नागरिकों को प्रदेश के गौरवशाली इतिहास एवं कला–संस्कृति से रूबरू होने का अवसर मिला।

वर्तमानः सामाजिक सरोकार, सुशासन और समावेशी विकास को नई दिशा : राज्य सरकार ने इन कार्यक्रमों में सामाजिक सरोकारों के साथ ही वर्तमान की दृष्टि से जनकल्याण, सुशासन और समावेशी विकास को प्राथमिकता दी। मुख्यमंत्री ने 14 मार्च को स्वच्छता संकल्प एवं जागरूकता कार्यक्रम में श्रमदान कर स्वच्छता का संदेश दिया तथा 15 मार्च को राज्य स्तरीय 'विकसित राजस्थान रन–2026' में सहभागिता कर युवाओं को स्वस्थ एवं अनुशासित जीवन शैली अपनाने का आव्हान किया। इसी कड़ी में 16 मार्च को डूंगरपुर के बेणेश्वर धाम में मनाए गए राजस्थान जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री ने जनजातीय क्षेत्रों को 1 हजार 902 करोड़ रुपये के 326 विकास कार्यों के लोकार्पण एवं शिलान्यास की सौगात दी। वहीं, उन्होंने 19 मार्च को राजस्थान रोडवेज की 207 नवीन बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

भविष्यः नव शक्ति, निवेश एवं नवाचार की आधारशिला

भविष्य के कर्णधार युवाओं को नई दिशा देने की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए राज्य सरकार ने 17 मार्च को राजस्थान युवा शक्ति दिवस के रूप में मनाया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने शिक्षा, कौशल विकास, उद्यमिता और खेल से जुड़े 485 करोड़ रुपये के विभिन्न कार्यों का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया। उन्होंने 403 स्टार्टअप्स को वायबिलिटी गैप का 1 हजार 145 लाख रुपये का फंड का वितरण किया तथा 9 हजार 432 युवाओं को कौशल उन्नयन प्रमाण पत्र भी सौंपे। राजस्थान को औद्योगिक और तकनीकी हब के रूप में स्थापित करने की दिशा में मुख्यमंत्री ने 18 मार्च को उद्यमी संवाद समारोह में इंडस्ट्रियल पार्क प्रमोशन पॉलिसी, राजस्थान एयरोस्पेस एंड डिफेंस और राजस्थान सेमीकंडक्टर पॉलिसी का अनावरण किया। इस कार्यक्रम के माध्यम से रीको औद्योगिक क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं के विकास से जुड़े 119 करोड़ रुपये लागत के 40 कार्यों का लोकार्पण और 226 करोड़ रुपये के 46 कार्यों का शिलान्यास भी किया गया। साथ ही, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार और विश्वकर्मा युवा उद्यमी प्रोत्साहन योजना सहित विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र तथा जोधपुर–पाली–मारवाड़ और बूढ़ी बावल औद्योगिक क्षेत्रों के आरक्षण पत्र सहित लीज डीड और अलॉटमेंट लेटर भी प्रदान किए गए। शर्मा ने राजस्थान दिवस के अवसर पर 19 मार्च को नई पहल करते हुए 'मुख्यमंत्री विकसित ग्राम–वार्ड अभियान' का शुभारंभ किया। इस अभियान का उद्देश्य ग्राम पंचायतों और शहरी वार्डों के विकास के लिए स्थानीय लोगों से सुझाव लेते हुए भविष्य की आवश्यकता के अनुसार मास्टर प्लान तैयार करना है, जो कि विकास की अवधारणा को विकेंद्रीकृत, जन सहभागिता और साक्ष्य–आधारित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इन आयोजनों की श्रृंखला में राज्य सरकार ने प्रदेश की समृद्ध विरासत को सहेजते हुए विकास यात्रा को गति दी और युवा शक्ति के माध्यम से भविष्य के सशक्त राजस्थान का स्पष्ट खाका प्रस्तुत किया। राज्य सरकार ने स्पष्ट किया कि भविष्य का नया राजस्थान अपनी संस्कृति एवं परंपराओं पर गर्व की अनुभूति करने के साथ ही आधुनिक तकनीक, निवेश, कौशल और नवाचार के माध्यम से आत्मनिर्भर एवं विकसित राज्य बनने की दिशा में अग्रसर है।

–हेमेन्द्र सिंह,
सहायक जनसंपर्क
अधिकारी,
डीआईपीआर